एम.ए.द्वितीय सेमेस्टर

(संस्कृत)

द्वितीय पेपर
साँख्य और मीमांसा

साँख्यकारिका

प्रस्तुतीकरण
डॉ ज्योत्स्ना सिंह

25 तत्व- प्रकृति, महत्तत्व, अहंकार, पांच तन्मात्राएं(शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध), पांच ज्ञानेन्द्रियां (श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिव्हा और घ्राण), पांच कर्मेन्द्रियां(वाक्, पाणि, पाद, पायु और उपस्थ), एक मन, पांच महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) तथा एक पुरुष।

करण-पांच ज्ञानेन्द्रियां(श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जीभ और घ्राण), पांच कर्मेन्द्रियां(वाक्, पाणि, पाद, पायु और उपस्थ), मन, अहंकार और बुद्धि 13 तत्वों का समुदाय।

सूक्ष्म शरीर-पांच ज्ञानेन्द्रियां(श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जीभ और घ्राण), पांच कर्मेन्द्रियां(वाक्, पाणि, पाद, पायु और उपस्थ), पांच तन्मात्राएं(शब्द, स्पर्श, रूप, रस और

Scanned by CamScanner

उपस्थ), पांच तन्मात्राएं(शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध), महत्तत्व, अहंकार और मन 18 तत्वों से सूक्ष्म शरीर का निर्माण होता है।

सृष्टि- प्रकृति और पुरुष के संयोग से सृष्टि बनती है।

सिद्धांत-सत्कार्यवाद।

प्रमाण- तीन (प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द)

सांख्य दर्शन में सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण- तीन गुण मिलते हैं जो क्रमशः सुख, दु:ख और मोह देने वाले हैं।

प्रश्न-सांख्य दर्शन के अनुसार सूक्ष्म शरीर क्या है आइए इस पर प्रकाश डालते हैं -(39-40 कारिका)
उत्तर- मूल प्रकृति प्रारंभ में प्रत्येक शरीर यानि पुरूष के लिए एक सूक्ष्म शरीर की सृष्टि करती है मन बुद्धि अहंकार पाँच ज्ञानेंद्रियां,पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पंचतन्मात्राऐं यह 18 मिलकर सूक्ष्म शरीर कहलाते हैं,साँख्यदर्शन के अनुसार सृष्टि के आरम्भ में ही प्रकृति पुरूष एक सूट्स शरीर को उत्पन्न कर देती है प्रकृति से महत्त्व महत्त्व से अहंकार और उससे 16 का समूह उत्पन्न होता है लिंग शरीर आसक्त है वह किसी पदार्थ में नहीं फंसता सूक्ष्म होने के कारण उसके प्रसार को रोका नहीं जा सकता

Scanned by CamScanner

काल से पूर्व तक इससे रहता है यह महत्व से लेकर तन मात्रा पर्यंत है अर्थात बुद्धि अहंकार मन 11 इंद्रियां 5 तन मात्राएं यह सूक्ष्म शरीर है सूक्ष्म शरीर स्वयं भोग में असमर्थ है इसीलिए स्थूल शरीर के सहयोग से भोग में साधन बनाता है स्थूल शरीर के आश्रम बिना यह भोग में समर्थ नहीं है। लिंग शरीर में बुद्धि के आठ भाव रहते हैं। धर्म-अधर्म, ज्ञान-अज्ञान वैराग्य-अवैराग्य ऐश्वर्य-अनैश्वर्य यह आठ बुद्धि के भाव हैं सूक्ष्म शरीर है है प्रलय काल में महत से लेकर तन्मात्रा पर्यंत या प्रकृति में लीन हो जाता है प्रलय काल में प्रकृति के मोह रूपी बंधन में बंधे होने से सांसारिक क्रियाओं में असमर्थ रहता है परंतु सृष्टि काल में पुनः संचरण करने लगता है।

सांख्यदर्शन में कई संशोधन विज्ञानभिक्षु ने किये हैं प्राय: सांख्यदर्शन में तीन अंत:करणों की चर्चा मिलती है। सांख्यकारिका में भी अन्त:करण त्रिविध* कहकर इस मत को स्वीकार किया। लेकिन विज्ञानभिक्षु अन्त:करण को एक ही मानते हैं। उनके अनुसार 'यद्यप्येकमेवान्त:करणं वृत्तिभेदेन त्रिविधं लाघवात्' सा.प्र.भा. 1/64)। आचार्य विज्ञानभिक्षु से पूर्व कारिकाव्याख्याओं के आधार पर प्रचलित दर्शन में दो ही शरीर सूक्ष्म तथा स्थूल मानने की परम्परा रही है। लेकिन आचार्य विज्ञानभिक्षु तीन शरीरों की मान्यता को युक्तिसंगत मानते हैं। सूक्ष्म शरीर बिना किसी अधिष्ठान के नहीं रहा सकता, यदि सूक्ष्म शरीर का आधार स्थूल

Scanned by CamScanner

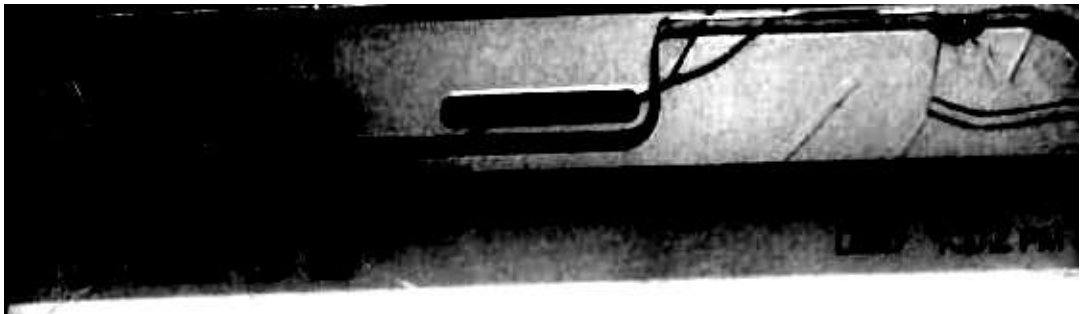

के नहीं रहा सकता, यदि सूक्ष्म शरीर का आधार स्थूल शरीर ही हो तो स्थूल शरीर से उत्क्रान्ति के पश्चात लोकान्तर गमन सूक्ष्म शरीर किस प्रकार कर सकता है? विज्ञानभिक्षु के अनुसार सूक्ष्म शरीर बिना अधिष्ठान शरीर के नहीं रह सकता अत: स्थूल शरीर को छोड़कर शरीर ही है*।। 'अङ्गुष्ठमात्र:पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जना हृदये सन्निविष्ट:*', अङ्गुष्ठमात्रं पुरुषं स*- आदि श्रुति-स्मृति के प्रमाण से अधिष्ठान शरीर की सिद्धि करते हैं।अन्य सांख्याचार्यों से लिंग शरीर के विषय में विज्ञानभिक्षु भिन्न मत रखते हैं। वाचस्पति मिश्र, माठर, शंकराचार्य आदि की तरह अनिरुद्ध तथा महादेव वेदान्ती ने भी लिंग शरीर को अट्ठारह तत्त्वों का स्वीकार किया। इनके विपरीत विज्ञानभिक्षु ने सूत्र 'सप्तदशैकम् लिंगम्*' की व्याख्या करते हुए 'सत्रह' तत्त्वों वाला 'एक' ऐसा स्वीकार करते हैं। विज्ञानभिक्षु अनिरुद्ध की इस मान्यता की कि. सांख्यदर्शन अनियतपदार्थवादी है- कटु शब्दों में आलोचना करते हैं* अनिरुद्ध ने कई स्थलों पर सांख्य दर्शन को अनियत पदार्थवादी कहा है।

Scanned by CamScanner